कोरूगेटेड बॉक्स उद्योग मुश्किल में

- उत्पादन खर्च बढ़ने से बढ़ा संकट
- कोरोना की मार से भी उद्योग प्रभावित

विश्ववार्ता संवाददाता

कानपुर। पिछले दो महीने में क्राफ्ट पेपर मिलों द्वारा निरंतर भाव वृद्धि किए जाने से और दूसरी ओर अन्य कन्वर्जन इनपुट कास्ट बढ़ने से भारत का कोरूगेटेड बॉक्स उद्योग मुश्किल में आ गया है। देसी और आयातित वेस्ट पेपर का भाव पिछले 2 महीने में प्रति मेट्रिक टन 4500 से 5000 तक बढ़ गया। दूसरे भारत और चीन के उत्पादक यूएसए और यूरोप से वेस्ट पेपर का आयात करते हैं, लेकिन लॉकडाउन में उत्पादन बंद रहने से इस समय वेस्ट पेपर की आपूर्ति की तुलना में मांग अधिक है। दूसरे विदेशी बाजारों में वेस्ट पेपर और फिनिश्ड प्रोडक्ट कि जो कुछ भी आपूर्ति उपलब्ध थी, वह चाइनीज मिलों ने खरीद ली है। क्राफ्ट पेपर मिलों ने बताया कि चाइनीस बेन के बावजूद भी वेस्ट कटिंग भाव अनिश्चित अवधि तक ऊंचा रहेगा। कोविड-19 लॉकडाउन अवधि में भारतीय पेपर मिलों द्वारा पर्याप्त माल आयात ना कर सकने के कारण इस समय जरूरी ग्रेड का माल यहां कम है और कुछ नीचले ग्रेड की यहां तंगी है।

भारत के 350 से अधिक ऑटोमेटिक कोरूगेटर और 10,000 से अधिक सेमी ऑटोमेटिक यूनिटें कोविड-19 के कारण भारी परेशानी अनुभव कर रही हैं. यह उद्योग 6 लाख से अधिक लोगों को रोजगार प्रदान करता है. उद्योग का वार्षिक उत्पादन 60 लाख टन का है और कुल बाजार का कद 24000 करोड़ रुपए का है. यह उद्योग 100% रीसायकल और पर्यावरणप्रेमी कच्ची सामग्री का उपयोग करता है।

इंडियन कोरूगेटेड केस मैन्युफैक्चरर्स एसो. (इकमा) के प्रमुख संदीप वाधवा ने सभी क्राफ्ट पेपर मिल्स एसोसिएशनों से भाव में स्थिरता और अनुशासन बनाए रखने का अनुरोध किया है। वर्तमान विषम परिस्थिति में सभी क्राफ्ट पेपर मिलो का और हमारे ग्राहकों का सहयोग अत्यंत जरूरी है। इकमा के उप प्रमुख हरीश मदन ने कहा कि उत्पादन खर्च में 18 से 20% की वृद्धि होने से कोरूगेटेड बॉक्स उद्योग का टिकना मुश्किल हो गया है। इन परिस्थितियों में बड़े एफएमसीजी ब्रांड मालिकों सहित बॉक्स के उपभोक्ताओं के लिए पर्याप्त समर्थन देना जरूरी है। इकमा के एमिरेट्स प्रेसिडेंट किरीट मोदी ने कहा कि क्राफ्ट पेपर का भाव बढ़ने के अलावा सभी अन्य इनपुट्स जैसे मानवबल कास्ट, स्टार्च- गम, फ्रेट और अन्य ओवरहेड काफी बढ़ गए हैं। पिछले कुछ वर्षों में कास्ट 60 से 70% बढ़ गई है।